कमल-नरोत्तम संघ के शिकार बने

शिवराज सरकार में जगह पाने से चूके चार पूर्व मंत्रियों को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की नाराजगी का शिकार होना पड़ा है, वहीं इस बार अपने रिश्तेदारों को मंत्री पद दिलाने में वरिष्ठ नेता भी नाकाम ही रहे।

पूर्व मंत्रियों कमल पटेल, विजय शाह, नरोत्तम मिश्रा, अंतर सिंह आर्य को लेकर संघ खासा नाराज चल रहा था। जैसे ही मंत्रिमंडल के गठन पर चर्चा शुरू हुई तो संघ ने साफ कह दिया कि इन चारों को मंत्रिमंडल से दूर रखा जाए। दिल्ली स्थित केंद्रीय नेतृत्व तक भी बात पहुंच गई। मंत्रिमंडल की प्रस्तावित सूची में इनमें से कुछ नाम शामिल थे, मगर संघ का दबाव पड़ते ही प्रदेश नेतृत्व ने मुख्यमंत्री को नये सिरे से विचार करना पड़ा। शनिवार सुबह 11 बजे तक इनके नाम पर मंथन होता रहा। संघ की तरफ से प्रदेश संगठन महामंत्री माखन सिंह अपनी बात रख रहे थे। संघ के सहकार्यवाह सुरेश सोनी की सहमति के बाद मलैया को छोड़कर शेष का पत्ता साफ हो गया। पूर्व मंत्रियों में मीना सिंह, हरेन्द्र सिंह बब्बू, मोती कश्यप और रामदयाल अहिरवार को खराब परफारमेंस ने उन्हें पहले दौर के मंत्रिमंडल में शामिल नहीं होने दिया।

पिछली सरकार में इस्तीफा देने वाले पूर्व मंत्री अजय विश्नोई को उस समय झटका लगा, जब उनसे कहा गया कि उन्हें मंत्रिमंडल से वंचित रखा जा रहा है। चुनाव जीतने के बाद में मुख्यमंत्री को शपथ लेने तक और उसके बाद मंत्रिमंडल चुने तक विश्नोई ने हर तरह से अपने पक्ष में माहौल बनाया था। मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में विश्नोई ने केंद्रीय नेताओं से भी समन्वय बैठाया था। वे दो दिन में भोपाल में ही डटे रहे। शनिवार को जब उनसे मना किया गया तो वे सुबह 11 बजे के करीब जबलपुर के लिए रवाना हो गये। विश्नोई ने बातचीत में कहा कि पार्टी ने जो निर्णय लिया है स्वीकार है।

नहीं चली रिश्तेदारी

पूर्व मुख्यमंत्री व वरिष्ठ नेता कैलाश जोशी उस समय स्तब्ध रह गये जब मंत्रिमंडल में उनके बेटे दीपक जोशी का नाम नहीं रहा। वे बेटे को मंत्रिमंडल में जगह दिलाने के लिए काफी प्रयासरत थे। इनके अलावा पार्टी ने रिश्तेदारी और परिजनों को भी मंत्रिमंडल में लेने में रुचि नहीं दिखाई। इनमें वीरेंद्र सकलेचा के पुत्र ओमप्रकाश सकलेचा, पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विक्रम वर्मा की पत्नी नीना वर्मा, प्रदेश महामंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते के रिश्तेदार रामप्यारे कुलस्ते, वरिष्ठ नेता कैलाश सारंग के बेटे विश्वास सारंग और पूर्व मुख्यमंत्री व पार्टी के वरिष्ठ नेता सुंदरलाल पटवा के भतीजे सुरेंद्र पटवा शामिल हैं।

रोहाणी होंगे विस के दोबारा स्पीकर

भोपाल । मध्यप्रदेश विधानसभा के नए स्पीकर ईश्वरदास रोहाणी होंगे। सीएम हाउस में आज हुई प्रदेश के वरिष्ठ नेताओं की बैठक में यह निर्णय लिया गया है, लेकिन इसकी घोषणा पांच जनवरी को भाजपा हाई कमान करेगा।सीएम हाऊस में प्रदेश भाजपा के प्रभारी अनंत कुमार एवं मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में वरिष्ठ नेताओं की बैठक हुई। जिसमें संगठन महामंत्री माखन सिंह, सह मंत्री भगवत शरण माथुर, प्रदेश अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर मौजूद थे। काफी विचार विमर्श के बाद श्री रोहाणी को मंत्रिमंडल में शामिल नहीं कर स्पीकर बनाने का निर्णय लिया गया। सूत्रों के अनुसार मुख्यमंत्री ने लोकसभा चुनाव के मद्देनजर श्री रोहाणी को ही स्पीकर बनाने की इच्छा व्यक्त की, जिसे प्रदेश भाजपा ने अपनी मंजूरी दे दी है। अब अंतिम फैसला हाईकमान को करना है। श्री रोहाणी एक अनुभवी एवं संसदीय ज्ञान के जानकार नेता हैं और इस समय विपक्ष भी काफी मजबूत है, इसलिए श्री रोहाणी को ही स्पीकर बनाने का निर्णय लिया गया है।

मंत्री और उनके विभाग

केबिनेट मंत्री

1.**शिवराजसिंह चौहान मुख्यमंत्री**-सामान्य प्रशासन, नर्मदा घाटी,विमानन एवं अन्य विभाग जो किसी मंत्री के पास नहीं हो।

2.**बाबूलाल गौर**-नगरीय प्रशासन, गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास ।

3.**राघवजी भाई**-वित्त योजना, आर्थिक सांख्यिकी ।

4.**गोपाल भार्गव**-पंचायत एवं विकास

5. **कैलाश विजयवर्गीय**-वाणिज्य उद्योग, रोजगार, आईटी, विज्ञान प्रोद्योगिकी , खाद्य प्रसंस्करण, ग्रामोद्योग एवं संसदीय कार्य।

6. **अनूप मिश्रा**-स्वास्थ्य एवं चिकित्सा।

7. **जयंत मलैया**- जल संसाधन, आवास एवं पर्यावरण

8. **जगदीश देवड़ा**- गृह परिवहन एवं जेल।

9.**लक्ष्मीकांत शर्मा**- जनसंपर्क संस्कृति, धार्मिक न्यास,जन शिकायत निवारण।

10. **नागेंद्रसिंह** - लोक निर्माण विभाग

11. **जगन्नाथसिंह**- आदिम जाति कल्याण विभाग

12. **तुकोजीराव पंवार**- पर्यटन, खेल एवं युवक कल्याण।

13. **अर्चना चिटनीस**- उच्च शिक्षा, स्कूल शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा।

14.**गौरीशंकर बिसेन**- लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी एवं सहकारिता।

15. **डॉ. रामकृष्ण कुसमारिया**-किसान कल्याण, कृषि विकास, पशुपालन, मछली पालन, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण।

राज्यमंत्री-स्वतंत्र प्रभार:-

1.**करणसिंह वर्मा**-राजस्व श्रम एवं पुनर्वास

2. **पारस जैन**-खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति

3. **रंजना बघेल**-महिला एवं बाल विकास, सामाजिक न्याय

4. **राजेंद्र शुक्ल**-वन, जैव विविधता, जैव प्रोद्योगिकी, खनिज एवं विधि-विधायी

राज्यमंत्री-.

1.**हरीशंकर खटीक**-आदिम जाति कल्याण

2. **नारायणसिंह कुशवाहा**-परिवहन, गृह, जेल

3. **देवसिंह सैयाम**-पंचायत एवं ग्रामीण विकास.

4. **के.एल. अग्रवाल**-सामान्य प्रशासन,विमानन नर्मदा घाटी

अन-तुले बोल के छिपे अर्थ

विशेष टिप्पणी

सुरेन्द्र बंसल

अब्दुल रहमान अंतुले के बयान पर जो फायरिंग हो रही है वह ऐसे बेमौके दिए बयानों में छिपे खेल को दिखाने और नए खेल को शुरु करने के लिए अकसर दिए जाते हैं । अंतुले को शायद ख्याल नहीं होगा कि मुंबई बम ब्लास्ट जैसे आक्रोशित मामले में राजनीतिक बयानबाजी करना अपने पर बैल को मारने का बुलावा देना है। फिर भी अंतुले बिना तुले बोल गए और कुछ अड़ कर बिंदास होने की कोशिश भी करने लगे।

प्राथमिक तौर पर यही लगता है कि अंतुले ने जो कुछ कहा बगैर सोचे समझे कहा है लेकिन उनका बयान भड़ास में, जल्दबाजी में दिया बयान जरुर है। दरअसल ऐसे नाजुक मौकों पर नाप-तौल से जो बुद्धिमत्ता की जरुरत होती है वह शायद अंतुले नहीं कर सके। उन्होंने कथित हिंदू आतंकवाद से इसे जोड़कर संसद में हंगामा मचाने के जो मौके बनाए वे वाकई निंदनीय है लेकिन उनके इस ना-समझी भरे बयान में बहुत से छिपे अर्थ हैं जिन्हें शहीद अफसरों की शहादत से जोड़कर और विवाद बनाकर नहीं देखा जाना चाहिए.

एटीएस प्रमुख श्री हेमंत करकरे, इंसपेक्टर-शूटर विजय सालस्कर और एसीपी श्री अशोक कामटे ने अपना काम और कर्त्तव्य बखूबी किया है और शहादत देकर आतंकवाद को बहादुरी से चुनौती दी है। फिर भी आंतरिक सुरक्षा के तीन बडे. अफसर जब पांच मिनट में एक साथ मारे जाते हैं तो शहादत पर नहीं व्यवस्था और जिम्मेदार तंत्र से सोचे समझे सवाल तो पूछे ही जाने चाहिए। वह दृश्य आज भी आंखें में उभर आता है जब ताज के भीतर आतंकवादी गोलियां चला रहे थे और बाहर एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे कनटोप और बुलैटप्रूफ पहनकर मुकाबले के लिए कमान संभालने की तैयारी कर रहे थे। यह सवाल बहुत महत्वपूर्ण है कि जब श्री करकरे फाइट के लिए तैयार हो रहे थे तब उनकी किससे मोबाइल फोन पर बात हो रही थी? बात करते हुए वे विचलित नजर आ रहे थे, वह फोन किसका था? क्या उन्हें फोन पर किसी ने कामा अस्पताल जाने का आदेश दिया था, हां तो किसने और क्यों दिया था ये निर्देश? या फोन घर से था जिसका कोई अर्थ नही है।

यह कोई साजिश तो नहीं हो सकती पर ऐसे संवेदनशील मौके पर निर्णय की अदूरदर्शिता तो है। जिसके तहत एक साथ तीन बड़े और महत्वपूर्ण अफसरों को एक ही गाड़ी में कामा अस्पताल भेजा जाता है। जब यह खबर हो की आतंकवादियों के पास अत्याधुनिक हथियार हैं क्या उन्हें छोटी गनो और कुछ सुरक्षाकर्मियों के सहारे आतंकवादियों के सामने कर देना समझदारी है? इसका जवाब किसी और को नहीं महाराष्ट्र सरकार के गृहमंत्रालय को देना चाहिए। सवाल यह भी है कि क्या युद्ध में कभी किसी सेनापति को मोर्चे पर भेजा जाता है? आतंकवादी जिस तैयारी से घुसे थे वे एक तरह से हमसे युद्ध ही कर रहे थे। कोई भी अनुभवी अफसर तब ऐसे नहीं जा सकता जैसे करकरे,कामटे और सालस्कर एक साथ चले गए। फिर क्या वजह थी और किसने उन्हें इस तरह कामा अस्पताल की तरफ भेज दिया? कौन है वह जो इन वरिष्ठ अफसरों की निहत्थी मौत का जिम्मेदार है यह जानना देश के लिय जरुरी है। ये बातें अंतुले के बोल से निकलना चाहिए थीं। इन अफसरों की शहादत को राजनैतिक तूल देने के बजाए अंतुले को नाप तौल कर बोलना था। अंतुले की बोली में दुर्गन्ध तो थी ही जिसे अब वे माउथ फ्रेशनर च्यूइंग गम की तरह मुंह में घूमा-घूमाकर साफ करने में लगे हैं। अंतुले खुद नहीं समझ सके फिर भी अपने अन-तुले बोलों से उनने एक मौका निकल रहे अर्थो को समझने का दिया है।

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८